प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

आत्मा ही सुख-दु:ख की कर्त्ता है: आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 4 जुलाई , 2010

आचार्य महाश्रमण ने बौद्ध ग्रंथ धम्मपद एवं जैनागम उत्तराध्यन पर तुलनात्मक प्रवचन करते हुए कहा कि दुश्मन का दुश्मन नुकशान कर देता है लेकिन सबसे ज्यादा नुकशान मिथ्या दृष्टिकोण से होता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य की आत्मा ही सुख-दु:ख की कर्ता है, आत्मा ही मनुष्य की मित्र है और आत्मा की मनुष्य की सबसे बड़ी दुश्मन होती है। मनुष्य का चित्त पापकर्म के द्वारा मलिन बन जाता है, जब पाप कर्मों के बंध का उदय होता है तो प्राणी को कष्ट उठाना पड़ता है, इसलिए कोई बड़ा शत्रु है तो वह आत्मा ही है और सबसे अच्छा मित्र भी मनुष्य की आत्मा ही होती है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने आगे कहा कि आत्मा ही हित और अहित करने वाली है। उत्तराध्ययन में भी ऐसा ही कहा गया है कि एक छेद करने वाला जितना नुकशान नहीं करता उतना एक नुकशान दुश्प्रवृति के कारण आत्मा करती है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि मनुष्य के मन में दया, अनुकंपा का भाव होना चाहिए, जिसके मन में दया, अनुकंपा की भावना है वह असातना से बच जाता है, जहां दया भाव नहीं है, निष्ठुरता है वहां चित्त मिथ्याप्राणीधान वाला बनता है, हमारा चित्त सम्यक्प्राणीधान वाला बना रहे ऐसा प्रयास करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आदमी को पुरुषार्थ करना चाहिए। असफलता अंतिम नहीं है पुरुषार्थ करते-करते एक दिन इतिहास बना देता है। व्यापारी को व्यापार में पुरुषार्थ करना चाहिए जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में काम करता है उसे उसे क्षेत्र में पुरुषार्थ करते रहना चाहिए, पुरुषार्थ से निश्चित ही सफलता प्राप्त हो जाती है।

इस अवसर पर हरियाणा के टोहाना क्षेत्र से व उदयपुर से संघबद्ध रूप में आए श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री महाश्रमण को अपने-अपने क्षेत्रों में पधारने की अर्ज की। स्थानीय ज्ञानशाला के बच्चों ने भी उपस्थित होकर आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन किये।

आचार्यश्री महाश्रमण आज मघवा स्मारक

आचार्यश्री महाश्रमण आज (5 जुलाई) प्रात: 6.15 बजे श्री समवसरण से प्रस्थान कर दुगड़ विद्यालय रोड, घण्टाघर रोड होते हुए मघव स्मारक पधारेंगे। जहां एक दिवसीय प्रवास में प्रवचन एवं रात्रि प्रवास भी मघवा स्मारक में होगा। दिनांक 6 जुलाई को प्रात: 6 बजे मघवा स्मारक से प्रस्थान कर पोकरमल बुच्चा के यहां विराजेंगे जहां 9 जुलाई तक प्रवास करेंगे। 10 जुलाई को पुन: श्री समवसरण में पधारेंगे। उक्त जाकनारी स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने दी।

– **शीतल बरड़िया**
(मीडिया संयोजक)